जयसन्तोषी माँ
शुक्रवार
व्रतकथा
तथा उद्यापन वि
सहित सम्पूर्ण
आरती भजन
अन्नपूर्णा
सहित

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

* श्री शुक्रवार व्रत कथा *

(सरल हिन्दी भाषा)

श्री संतोषी माता जी की महिमा तथा व्रत कथा

सुन्दर भजन और आरतियां आदि दी गई हैं।

प्रकाशक

न्यू स्टैन्डर्ड पब्लिकेशन्स १८१३ चन्द्रावल रोड, दिल्ली-११०००७

मूल्य 6.00/७ रुपये

फोन : २९१७२१७.

* श्री शुक्रवार व्रत कथा *

अथवा

सन्तोषी माता की कथा

सिद्ध सदन सुन्दर बदन गणनायक महाराज। दास आपका हूँ सदा कीजे जन के काज।।
जय शिवशंकर गंगाधर जय जय उमा भवानी। सियाराम कीजे कृपा हरि राधा कल्यानी।।
जय सरस्वती जय लक्ष्मी जय जय गुरु दयाल। देव विप्र गौ संत जय भारत देश विशाल।।
चरण कमल गुरुजनों के नमन करूं मैं शीश। मो घर सुख-संपति भरो देकर शुभ आशीश।।

भक्त बन्धुओं और बहिनो!

आज एक ऐसी पवित्र वार्ता चरित्र रूप में सुना रहे हैं जिसके श्रद्धापूर्वक मनन करने व सुनने से सद्गृहस्थ प्राणियों से युक्त घर में हर प्रकार का सुख और संतोष आता है। यह देवी अनेकों रूप वाली बनकर संसार में व्याप्त.हो रही है। संसार के सुखों को खोजने वाले लागों ने बहुत जगह इस देवी का प्रभाव देखा है, लाखों भक्त इस घटघट व्यापी महान् शक्ति को भक्ति पूर्वक धारण कर हर प्रकार से सुखी बन चुके हैं। इस परम महान् अलौकिक देवी

शक्ति का नाम सच्ची श्रद्धा एवं अन्तःकरण का निष्कर्ष स्वाभाविक प्रेम है। जगत् के समस्त पदार्थों पर राज्य करने वाला अलौकिक सत्ता का रूप आप अपने नेत्रों से नहीं देख सकेंगे, क्योंकि यह सर्वत्र उपस्थित होते हुए भी निराकार और अगोचर है, माता उमा को इसका रूप बताते हुए भगवान शंकर ने कहा है कि प्रभु को प्रत्यक्ष देखना हो तो अपने हृदय के प्रेम में देखो। जब प्रभु के द्वारपाल जय विजय शाप के कारण रावण कुम्भकरण हुए तब उनके अत्याचारों से दुःखी होकर देवताओं ने सर्व-रक्षक नारायण से प्रार्थना की कि हे प्रभु ! हमारी रक्षा करो, परन्तु इतने पर भी प्रकट नहीं हुए, तब भगवान शंकर ने बताया, दूर क्यों जाते हो, प्रभु को अपने हृदय में खोजो।

दोहा-हाजिर हैं हर जगह पर, प्रेम रूप अवतार। करें न देरी एक पल, हो यदि सत्य विचार।।
प्रेमी के वश में बंधे, मांगे सोई देत। बात न टालें भक्त की, परखें सच्चा हेत।।

संसार में हर प्राणी को चाहिए कि अपनी धारणा को सच्ची बनाकर रक्खे। प्रेम का यह मूल मंत्र है—अब यह बात कभी न टले, भगवान प्रेम के वश में हैं। वह स्वामी हैं हम सेवक हैं, सब काम उन्हीं के वश में हैं।। हम सदा उन्हीं का ध्यान धरें कुछ मन में भेद नहीं रखते। वह

सत्य रूप सर्वसाक्षी हैं सब जीव उन्हीं के वंश में हैं।। सूरज में जैसे है प्रकाश चन्दा मे शीतलता छाई। वायु में जैसे है प्रवाह वे ईश व्याप्त सर्वत्र में हैं।। अब और ध्यान में मत भटको, बस उन्हीं का ध्यान धरो। प्रभु होवेंगे साकार शीघ्र सब रस करुणा के रस में हैं।। इसलिए खड़े हो जाओ और सब मिलकर हरि वाणी का गान करो ! नारायण अभी प्रकट होंगे, ऐसी ताकत हरि यश में है।

श्रीकृष्ण भगवान् स्वयं गीता के चतुर्थ अध्याय में बतलाते हैं–

श्रद्धा वाले को ज्ञान मिले, तत्पर इन्द्रिय वाला हो। पावे जो ज्ञान शीघ्र ही तब सुख-शांति स्नेह निराला हो ।। दोहा-वन में दावानल लगी चन्दन वृक्ष जरात । वृक्ष कहे हंसा सुनो क्यों न पंख खोल उड़जात ।। प्रारब्ध पहले रचा पीछे रचा शरीर । तुलसी माया मोह फंस, प्राणी फिरत अधीर ।। तुलसी मीठे वचन से सुख उपजत चहुँ ओर । वशीकरण यह मन्त्र है तजदे वचन कठोर ।। मान, मोह, आसक्ति तजि बनो अध्यात्म्य अकाम । द्वन्द्व मूल सुख रहित नर पावत अव्यय धाम ।। तामें ३ नरक के द्वार हैं काम क्रोध अरु लोभ । उन्हें त्याग कीन्हें मिलत आत्म-सुख बिन क्षोभ ।। सब धार्मों को त्याग कर मो शरणागति धार ।

सब पापों से मैं तेरा करूं शीघ्र उद्धार ।। यह गीता का ज्ञान है सब शास्त्रों का सार । भक्ति सहित जो नर पढ़े लहै आत्म उद्धार ।। गीता के सम ज्ञान नहिं मंत्र न प्रेम से आन । शरणागति सम सुख नहीं देव न कृष्ण समान ।। अमृत पी संतोष का हरि से ध्यान लगाय । सत्य राख संकल्प मन विजय मिले जहां ज़ाय ।। मनचाही सब कांमना आप ही पूरन होय ।। निश्चय रख भगवान पर पल में दें सब दुःख खोय ।।

* संतोषी माता की कथा और विधि *

संतोषी माता के पिता गणेश, माता ऋद्धि-सिद्धि, धन-धान्य सोना-चाँदी, मोती-मूंगा रत्नों से भरा परिवार, गणपति पिता की दुलार भरी गणपति देव की कमाई दरिद्रता दूर, क़लह का नाश, सुख-शांति का प्रकाश, बालकों की फुलबारी, धन्धे में मुनाफे की भारी कमाई, मन की कामना पूर्ण, शोक-विपत्ति चिंता सब चूर्ण। संतोषी माता का लो नाम, जिससे बन जायें सारे काम, बोलो संतोषी माता की जय!

इस व्रत को करने वाला कथा कहते व सुनते समय हाथ में गुड़ और भुने हुए चने रखे,

सुनने वाले संतोषी माता की जय ! संतोषी माता की जय ! इस प्रकार जय-जयकार मुख से बोलते जायें। कथा समाप्त होने पर हाथ का गुड़ चना गौ माता को खिलावे। कलश में रखा हुआ गुड़ चना सबको प्रसाद के रूप में बाट दे, कथा से पहले कलश को जल से भरे उसके ऊपर गुड़ चने से भरा कटोरा रखे, कथा समाप्त होने और आरती होने के बाद कलश के जल को घर में सब जगहों पर छिड़के और बचा हुआ जल तुलसी की क्यारी में डाल देवे।.सवा आने का गुड़ चना लेकर माता का व्रत करे। सवा पैसे का ले तो भी कोई आपत्ति नहीं। गुड़ घर में हो तो ले लेवे, विचार न करे क्योंकि माता भावना की भूखी हैं कम ज्यादा का कोई विचार नहीं, इसलिए जितना भी बन पड़े अर्पण करे, श्रद्धा और प्रेम से प्रसन्न मन हो व्रत करना चाहिए। व्रत के उद्यापन में अढ़ाई सेर खाजा, मोमनदार पूड़ी, खीर, चने का शाक, नैवेद्य रखे, घी का दीपक जला संतोषी माता की जय-जयकार बोल नारियल फोड़ें। इस दिन घर में कोई खटाई न खावे और न आप खावे न किसी दूसरे को खाने दे। इस दिन आठ लड़कों को भोजन करावे, देवर-जेठ घर कुटुम्ब के लड़के मिलते हों तो दूसरों को बुलाना नहीं। कुटुम्ब में न मिलें तो ब्राह्मणों के, रिश्तेदारों के या पड़ौसियों के लड़के बुलावे । उन्हें खटाई की कोई वस्तु न दे

तथा भोजन कराकर यथाशक्ति दक्षिणा देवे। नकद पैसा न दे, कोई वस्तु दक्षिणा में दे। व्रत करनें वाला कथा सुन, प्रसाद ले, एक समय भोजन करे, इस तरह से माता अत्यन्त खुश होगी और दु:ख दरिद्रता दूर होकर मनोकामना पूरी होगी।

माता की कथा प्रारम्भ

एक बुढ़िया थी और उसके सात पुत्र थे, छः कमाने वाले थे, एक निकम्मा था। बुढ़िया मां छहों पुत्रों की रसोई बनाती, भोजन कराती और पीछे से जो कुछ बचता सो सातवें को दे देती थी। परन्तु वह बड़ा भोला-भाला था, मन में विचार न करता था। एक दिन अपनी बहू से बोला—देखो ! मेरी माता का मुझ पर कितना प्यार है। वह बोली—क्यों नहीं, सबका जूठा बचा हुआ तुमको खिलाती हैं। वह बोला—भला ऐसा भी कहीं हो सकता है, मैं जब तक आंखों से न देखूं मान नहीं सकता। बहू ने हंसकर कहा—तुम देख लोगे तब तो मानोगे। कुछ दिन बाद बड़ा त्यौहार आया। घर में सात प्रकार के भोजन और चरमा लड्डू बने। वह जाँचने को सिर दर्द का बहाना कर पतला कपड़ा कपड़ा सिर पर ओढ़कर रसोई घर में सो गया और कपड़े में

से सब देखता रहा। छहों भोजन करने आये, उसने देखा मां ने उनके लिए सुन्दर-सुन्दर आसन बिछाये हैं, सात प्रकार की रसोई परोसी है, वह आग्रह करके जिमाती है, वह देखता रहा। छहों भाई भोजन कर उठे तब माता ने उनकी जूंठी थालियों में से लड्डूओं के टुकड़ों को उठाया और एक लड्डू बनाया जूठन साफ कर बुढ़िया ने पुकारा—उठो बेटा! छहों भाई भोजन कर गये अब तू ही बाकी है, उठ न, कब खायेगा? वह कहने लगा—मां मुझे भोजन नहीं करना। मैं परदेश जा रहा हूँ। माता ने कहा—कल जाता हो तो आज ही जा। वह बोला—हां-हां आज ही जा रहा हूँ। यह कहकर वह घर से निकल गया। चलते समय बहू की याद आई, वह गौशाला में कण्डे थाप रही थी, वहीं जाकर उससे बोला—

दोहा-हम जावें परदेश को आवेंगे कुछ काल। तुम रहियो संतोष से धरम आपनो पाल।।
वह बोली-जाओ पिया आनन्द से हमरो सोच हटाय। राम भरोसे हम रहें ईश्वर तुम्हें सहाय।।
देउ निशानी आपनी देख धरूं मैं धीर। सुधि हमरी मती बिसारियो रखियो मन गंभीर।।

वह बोला—मेरे पास तो कुछ नहीं, यह अंगूठी है सो ले और अपनी कुछ निशानी मुझे दे, वह बोली—मेरे पास क्या है यह गोबर भरा हाथ है। यह कहकर उसकी पीठ में गोबर के हाथ

की थाप मार दी। वह चल दिया। चलते-चलते दूर देश में पहुँचा। वहा पर एक साहूकार की दुकान थी, वहां जाकर कहने लगा—भाई मुझे नौकरी पर रख लो। साहूकार को जरूरत थी, बोला—रह जा। लड़के ने पूछा—तनखा क्या दोगे? साहूकार ने कहा—काम देखकर दाम मिलेंगे। साहूकार की नौकरी मिली, वह सवेरे सात बजे से रात तक नौकरी बजाने लगा। कुछ दिनों में दुकान का सारा लेन-देन हिसाब-किताब ग्राहकों को माल बेचना, सारा काम करने लगा। साहूकार के ७-८ नौकर थे, वे सब चक्कर खाने लगे कि यह तो बहुत होशियार बन गया है सेठ ने भी काम देखा और तीन महीने में उसे आधे मुनाफे का साझीदार बना लिया। वह १२ वर्ष में ही नामी सेठ बन गया और मालिक सारा कारोबार उस पर छोड़कर बाहर चला गया। अब बहू पर क्या बीती सो सुनो। सास-ससुर उसे दुःख देने लगे। सारी गृहस्थी का काम करके उसे लकड़ी लेने जंगल में भेजते। इस बीच घर की रोटियों के आटे से जो भूसी निकलती उसकी रोटी बनाकर रखदी जातीं और फूटे नारियल की नारेली में पानी। इस तरह दिन बीतते रहे। एक दिन वह लकड़ी लेने जा रही थी कि रास्ते में बहुत-सी स्त्रियां संतोषी माता का व्रत करती दिखाई दीं। वह वहां खड़ी हो कथा सुनकर बोली-बहिनो ! यह तुम किस देवता

का व्रत करती हो और इसके करने से क्या फल होता है? इस व्रत के करने की क्या विधि है? यदि तुम अपने इस व्रत का विधान मुझे समझा कर कहोगी तो मैं तुम्हारा बड़ा अहसास मानूंगी। तब उनमें से एक स्त्री बोली—सुनो यह संतोषी माता का व्रत है, इसके करने से निर्धनता, दरिद्रता का नाश होता है, लक्ष्मी आती है। मन की चिंतायें दूर होती हैं। घर में सुख होने से मन को प्रसन्नता और शांति मिलती है। निपुत्र को पुत्र मिलता है, पीतम बाहर गया हो तो जल्दी आवे। क्वारी कन्या को मनपसन्द वर मिले, राज द्वारे में बहुत दिनों से मुकदमा चलता हो तो खत्म हो जावे, सब तरह सुख शांति हो, घर में धन जमा हो, पैसा जायदाद का लाभ हो, रोग दूर हो जावे तथा और जो कुछ मन में कामना हो सो वे सब इस संतोषी माता की कृपा से पूरी हो जावें, इसमें सन्देह नहीं। वह पूछने लगी—यह व्रत कैसे किया जावे यह भी बताओ तो बड़ी कृपा होगी। स्त्री कहने लगी—"सवा आने का गुड़ चना लेना, इच्छा हो तो सवा पांच आने का लेना या सवा रुपये का भी सहूलियत अनुसार लेना बिना परेशानी, श्रद्धा और प्रेम से जितना बन सके सवाया लेना। सवा पैसे से सवा पाँच आना तथा इससे भी ज्यादा शक्ति और भक्ति के अनुसार लें। हर शुक्रवार को निराहार रह, कथा कहना सुनना, इसके

बीच क्रम टूटे नहीं, लगातार नियम पालन करना। सुनने वाला कोई न मिले तो घी का दीपक जला, उसके आगे जल के पात्र को रख कथा कहना परन्तु नियम न टूटे। जब तक कार्य सिद्ध न हो, नियम का पालन करना और कार्य सिद्ध हो जाने पर व्रत का उद्यापन करना, तीन मास में माता फल पूरा करती है। यदि किसी के खोटे ग्रह हों तो भी माता वर्ष में अवश्य कार्य को सिद्ध करती है। कार्य सिद्ध होने पर ही उद्यापन करना चाहिए बीच में नहीं। उद्यापन में अढ़ाई सेर आटे का खाजा तथा इसी परिमाण से खीर तथा चने का साग करना। आठ लड़कों को भोजन कराना, जहां तक मिलें देवर-जेठ, भाई-बन्धु, कुटुम्ब के लड़के लेना, न मिलें तो रिश्तेदारों और पड़ोसियों के लड़के बुलाना, उन्हें भोजन कराना यथाशक्ति दक्षिणा दे माता का नियम पूरा करना, उस दिन घर में कोई खटाई न खावे।" यह सुनकर बुढ़िया के लड़के की बहू चल दी। रास्ते में लकड़ी के बोझ को बेच दिया और उन पैसों से गुड़ चने ले माता के व्रत की तैयारी कर आगे चली और सामने मन्दिर देख पूछने लगी—यह मन्दिर किसका है। सब कहने लगे—संतोषी माता का मन्दिर है। यह सुन माता के मन्दिर में जा माता के चरणों में लोटने लगी। दीन होकर विनती करने लगी—"मां ! मैं निपट मूर्ख हूँ व्रत के नियम कुछ नहीं

जानती। मैं बहुत दुःखी हूँ। हे माता जगजननी ! मेरा दुःख दूर कर, मैं तेरी शरण में हूँ।" माता को दया आई एक शुक्रवार बीता कि दूसरे शुक्रवार को ही इसके पति का पत्र आया और तीसरे को उसका भेजा हुआ पैसा भी आ पहुँचा। यह देख जेठानी मुँह सिकोड़ने लगी—इतने दिनों में इतना पैसा आया, इसमें क्या बड़ाई है। लड़के ताने देने लगे—काकी के पास अब पत्र आने लगे, रुपया आने लगा, अब तो काकी की खातिर बढ़ेगी, अब तो काकी बुलाने से भी नहीं बोलेगी। बेचारी सरलता से कहती—भैया ! पत्र आवे, रुपया आवे तो हम सबके लिए अच्छा है। ऐसा कहकर आंखों में आंसू भर संतोषी माता के मन्दिर में आ मातेश्वरी के चरणों में गिरकर रोने लगी—मां ! मैंने तुमसे पैसा नहीं मांगा। मुझे पैसे से क्या काम है? मुझे तो अपने सुहाग से काम है। मैं तो अपने स्वामी के दर्शन और सेवा मांगती हूँ। तब माता ने प्रसन्न होकर कहा—जा बेटी ! तेरा स्वामी आयेगा। यह सुन खुशी से बावली हो घर में जा काम करने लगी। अब संतोषी मां विचार करने लगी—इस भोली पुत्री से मैंने कह तो दिया तेरा पति आवेगा, पर आवेगा कहां से? वह तो स्वप्न में भी इसे याद नहीं करता, उसे याद दिलाने मुझे जाना पड़ेगा। इस तर माता बुढ़िया के बेटे के पास जा स्वप्न में प्रगट हो कहने लगी—साहूकार

के बेटे ! सोता है या जागता है? वह बोला—माता ! सोता भी नहीं हूँ जागता भी नहीं हूँ, बीच में ही हूँ, कहो क्या आज्ञा है? मां कहने लगी—तेरा घर बार कुछ है या नहीं? वह बोला—मेरा सब कुछ है माता ! मां-बाप, भाई-बहिन, बहू, क्या कमी है? मां बोली—भोले पुत्र ! तेरी स्त्री घोर कष्ठ उठा रही है। मां-बाप उसे दुःख दे रहे हैं, वह तेरे लिए तरस रही है, तू उसकी सुधि ले। वह बोला—हां माता ! यह तो मुझे मालूम है परन्तु जाऊं तो जाऊं कैसे? परदेश की बात है, लेने-देन का कोई हिसाब नहीं, कोई जाने का रास्ता नजर नहीं आता, कैसे चला जाऊं? मां कहने लगी—मेरी बात मान, सवेरे नहा-धोकर संतोषी माता का नाम ले, घी का दीपक जला, दण्डवत् कर दुकान पर जा बैठना। देखते-देखते तेरा लेन-देन सब चुक जायेगा जमा माल बिक जायेगा, सांझ होते-होते धन का ढेर लग जायेगा। जब सवेरे बहुत जल्दी उठ उसने लोगों से अपने सपने की बात कही तो वे लोग उसकी बात अनसुनी कर दिल्लगी उड़ाने लगे—कहीं सपने भी सच होते हैं? एक बूढ़ा बोला—देख भाई ! मेरी बात मान, इस प्रकार सांच झूठ करने के बदले देवता ने जैसा कहा है, वैसा ही करने में तेरा क्या जाता है। वह बूढ़े की बात मान, स्नान कर संतोषी मां को दण्डवत् कर, घी का दीपक जला, दुकान पर जा बैठा।

थोड़ी देर में वह क्या देखता है कि देने वाले रुपया लाये, लेने वाले हिसाब लेने लगे, कोठे में भरे सामानों के खरीददार नकद दाम में सौदा लेने लगे, शाम तक धन का ढेर लग गया। माता का चमत्कार देख प्रसन्न हो मन में माता का नाम ले, घर ले जाने के वास्ते गहना, कपड़ा खरीदने लगा और वहां के काम से निपट वह घर को रवाना हुआ। वहां बहू बेचारी जंगल में लकड़ी लेने जाती है, लौटते वक्त मां के मन्दिर पर विश्राम करती है। वह तो उसका रोजाना रुकने का स्थान था। दूर से धूल उड़ती देख वह माता से पूछती है—हे माता ! यह धूल कैसी उड़ रही है? मां कहती है—हे पुत्री ! तेरा पति आ रहा है। अब तू ऐसा कर, लकड़ियों के तीन बोझ बना ला, एक नदी किनारे रख, दूसरा मेरे मंदिर पर और तीसरा अपने सिर पर रख, तेरे पति को लकड़ी का गट्ठा देखकर मोह पैदा होगा वह वहां रुकेगा नाश्ता पानी बना खाकर मां से मिलने जायेगा, तब तू लकड़ियों का बोझ उठाकर घर जाना और बीच चौक में गट्ठा डालकर तीन आवाजें जोर से लगाना—लो सासूजी ! लकड़ियों का गट्ठा लो, भूसी की रोटी दो और नारियल की नरौली में पानी दो, आज मेहमान कौन आया है? मां की बात सुन, बहू 'बहुत अच्छा माता !' कहकर प्रसन्न हो लकड़ियों के तीन गट्ठे ले आई। एक नदी तट पर, एक माता के

मंदिर पर रखा, इतने में ही एक मुसाफिर आ पहुँचा। सूखी लकड़ी देख उसकी इच्छा हुई कि अब यहीं विश्राम करें और भोजन बना खाकर गांव जाये। इस प्रकार भोजन बना विश्राम कर वह गांव को गया। सबसे प्रेम से मिला, उसी समय बहू सिर पर लकड़ी का गट्ठा लिये आती है। लकड़ी का भारी बोझ आंगन में डाल, जोर से तीन आवाज देती है लो सासूजी ! लकड़ी का गट्ठा लो भूसी की रोटी दो, नारियल की नरौली में पानी दो, आज मेहमान कौन आया है? यह सुनकर उसकी सास आ, अपने दिये हुए कष्टों को भुलाने हेतु कहती है—बहू ऐसा क्यों कहती है, तेरा मालिक ही तो आया है। आ बैठ, मीठा भात खा, भोजन कर, कपड़े-गहने पहिन। इतने में आवाज सुन उसका स्वामी बाहर आता है और अंगूठी देख व्याकुल हो, मां से पूछता है—मां ! यह कौन है? मां कहती है बेटा यह तेरी बहू है, आज बारह वर्ष हो गये, तू जब से गया है तब से सारे गांव में जानवर की तरह भटकती फिरती है। काम-काज घर का कुछ करती नहीं, चार समय आकर खा जती है अब तुझे देखकर भूसी की रोटी और नारियल की नरौली में पानी मांगती है। वह लज्जित हो बोला—ठीक है मां मैंने इसे भी देखा है और तुम्हें भी देखा है अब मुझे दूसरे घर की ताली दो तो मैं उसमें रहूं। तब मां बोली—ठीक है बेटा ! तेरी जैसी मर्जी,

कहकर ताली का गुच्छा पटक दिया। उसने ताली ले दूसरे कमरे में जो तीसरी मंजिल के ऊपर था खोलकर सारा सामान जमाया। एक दिन में ही वहां राजा के महल जैसा ठाठ-बाट बन गया। अब क्या था वे दोनों सुखपूर्वक रहने लगे। इतने में अगला शुक्रवार आया। बहू ने अपने पति से कहा कि मुझे माता का उद्यापन करना है पति बोला बहुत अच्छा खुशी से करो। वह तुरन्त ही उद्यापन की तैयारी करने लगी। जेठ के लड़कों को भोजन के लिये कहने गई। उसने मंजूर किया परन्तु पीछे जेठानी अपने बच्चों को सिखलाती है—देखो रे! भोजन के समय सब लोग खटाई मांगना, जिससे इसका उद्यापन पूरा न हो। लड़के जीमने आये, खीर पेट भर कर खाई। परन्तु याद आते ही कहने लगे—हमें कुछ खटाई दो, खीर खाना हमें भाता नहीं, देखकर अरुचि होती है। बहू कहने लगी—खटाई किसी को नहीं दी जायेगी, यह तो संतोषी माता का प्रसाद है, लड़के उठ खड़े हुये, बोले—पैसा लाओ। भोली बहू कुछ जानती नहीं थी सो उन्हें पैसे दे दिये। लड़के उसी समय उठ करके इमली ला खाने लगे। यह देखकर बहू पर माता जी ने कोप किया। राजा के दूत उसके पति को पकड़ कर ले गये। जेठ-जेठानी मनमाने खोटे वचन कहने लगे—लूट-लूटकर धन इकट्ठा कर लाया था सो राजा के दूत उसे पकड़ कर ले गये। अब

सब मालूम पड़ जायेगा जब जेल की हवा खायेगा। बहू से यह वचन सहन नहीं हुये। रोती-रोती माता के मंदिर में गई। हे माता ! तुमने यह क्या किया? हंसाकर अब क्यों रुलाने लगीं। माता बोली—पुत्री ! तूने उद्यापन करके मेरा व्रत भंग किया है, इतनी जल्दी सब बातें भूला दीं। वह कहने लगी—माता ! भूली तो नहीं हूँ, न कुछ अपराध किया है, मुझे तो लड़कों ने भूल में डाल दिया। मैंने भूल से उन्हें पैसे दे दिये, मुझे क्षमा करो मां ! मां बोली—ऐसी भी कहीं भूल होती है? वह बोली—मां मुझे माफ कर दो मैं फिर तुम्हारा उद्यापन करूंगी। मां बोली—अब भूल मत करना। वह बोली—अब भूल न होगी, मां अब बतलाओ वह कैसे आवेंगे? मां बोली—जा पुत्री ! तेरा पति तुझे रास्ते में ही आता मिलेगा। वह घर को चली। राह में पति आता मिला। उसने पूछा—तुम कहां गये थे? तब वह कहने लगा—इतना धन कमाया है, उसका टैक्स राजा ने मांगा था, वह भरने गया था। वह प्रसन्न हो बोली—भला हुआ, अब घर को चलो। कुछ दिन बाद फिर शुक्रवार आया। वह बोली—मुझे माता का उद्यापन करना है। पति ने कहा करो। वह फिर जेठ के लड़कों को भोजन को कहने गई। जेठानी ने एक दो बात सुनाई और लड़कों को सिखा दिया कि तुम पहले ही खटाई मांगना। लड़के कहने लगे—हमें

खीर खाना नहीं भाता, जी बिगड़ता है, कुछ खटाई खाने को देना। वह बोली—खटाई खाने को नहीं मिलेगी, आना है तो आओ। वह ब्राह्मणों के लड़के लाकर भोजन कराने लगी। यथाशक्ति दक्षिणा की जगह एक-एक फल उन्हें दिया। इससे संतोषी माता प्रसन्न हुई माता की कृपा होते ही नवें मास उसको चन्द्रमा के समान सुन्दर पुत्र प्राप्त हुआ। पुत्र को लेकर प्रतिदिन माता जी के मन्दिर को जाने लगी। मां ने सोचा कि वह रोज आती है, आज क्यों न मैं ही इसके घर चलूं। इसका आसरा देखूं तो सही। यह विचार कर माता ने भयानक रूप बनाया। गुड़ और चने से सना मुख, ऊपर से सूंड के समान होंठ, उस पर मक्खियां भिन-भिना रही हैं। देहलीज में पांव रखते ही उसकी सास चिल्लाई—देखा रे! कोई चुडैल डाकिन चली आ रही है। लड़कों इसे भगाओ नहीं तो किसी को खा जायेगी। लड़के डरने लगे और चिल्ला कर खिड़की बन्द करने लगे। बहू रोशनदान में से देख रही थी, प्रसन्नता से पगली होकर चिल्लाने लगी—आज मेरी माता जी मेरे घर आई हैं यह कहकर बच्चे को दूध पीने से हटाती है। इतने में सास का क्रोध फूट पड़ा। बोली—रांड इसे देखकर कैसी उतावली हुई है जो बच्चे को भी पटक दिया। इतने में मां के प्रताप से जहां देखो लड़के ही लड़के नजर आने लगे। वह

बोली—मां जी, मैं जिनका व्रत करती हूँ यह वही संतोषी माता हैं। इतना कह झट से सारे घर के किवाड़ खोल देती है। सबने माता के चरण पकड़ लिये और विनती कर कहने लगे—हे माता ! हम मूर्ख हैं, हम अज्ञानी हैं पापी हैं। तुम्हारे व्रत की विधि नहीं जानते, तुम्हारा व्रत भंग कर हमने बहुत बड़ा अपराध किया है। हे माता ! आप हमारा अपराध क्षमा करो। इस प्रकार माता प्रसन्न हुई ! माता ने बहू को जैसा फल दिया वैसा सबको दे। जो पढ़े उसका मनोरथ पूर्ण हो। बोलो संतोषी माता की जय !

योगसिद्ध विदेह जनक को गुरु अष्टावक्र ने आधे श्लोक में ही सब शास्त्रों का सार बता दिया था—

ग्रन्थ करोड़न में कहा है ये सबका सार। ब्रह्म सत्य सब झूठ है जीव ही ब्रह्म निहार।।
जीव से ही जीवित जगत माया खेलत खेल। ब्रह्म रूप पहिचान लो कटे जगत् की जेल।।

लेने वाले हिसाब लेन लगे, का० म मर

२०

* संतोषी माता जी की आरती *

जय संतोषी माता जय संतोषी माता। अपने सेवक जन की सुख सम्पत्ति दाता।। जय०
सुन्दर चीर सुनहरा मां धारण कीन्हों। हीरा पन्ना दमके तन सिंगार लीन्हों।। जय०
गेरू लाल छटा छवि बदन कमल सोहे। मन्द हंसत करुणामयी त्रिभुवन मन मोहे।। जय०
स्वर्ण सिंहासन बैठी चंवर ढुरे प्यारे। धूप, दीप, नैवेद्य, मधुमेवा भोग धरे न्यारे।। जय०
गुड़ अरु चना परमप्रिय तामे संतोष कियो। संतोषी कहलाई भक्तन विभव दियो।। जय०
शुक्रवार प्रिय मानत आज दिवस सोही। भक्त मण्डली आई कथा सुनत मोही।। जय०
मन्दिर जगमग ज्योति मंगल ध्वनि छाई। विनय करें हम बालक चरनन सिर नाई।। जय०
भक्ति भावमय पूजा अंगीकृत कीजे। जो मन बसे हमारे इच्छा फल दीजे।। जय०
दु:खी, दरिद्री, रोगी, संकट मुक्त किये। बहु धन-धान्य भरे घर सुख सौभाग्य दिये।। जय०
ध्यान धरो जाने तेरो मनवांछित फल पायो। पूजा कथा श्रवण कर घर आनन्द आयो।। जय०
शरण गहे की लज्जा रखियो जगदम्बे। संकट तू ही निवारे दयामयी मां अम्बे।। जय०
संतोषी मां की आरती जो कोई गावे। ऋद्धि-सिद्धि सुख सम्पत्ति जी भरके पावे।। जय०

* आरती जय संतोषी मां (फिल्मी) *

मैं तो आरती उतारूं रे संतोषी माता की। जय जय सन्तोषी माता जय जय मां।।
बड़ी ममता है बड़ा प्यार मां की आंखों में। बड़ी करुणा माया दुलार मां की आंखों में।।
क्यूं ना देखूं मैं बारम्बार मां की आंखों में। दिखे हर घड़ी नया चमत्कार मां की आंखों में।।
नृत्य करूं छुम छुम झम झमा झम झुम-झुम। झांकी निहारूं रे ओ प्यारी २ झांकी निहारूं रे।।
मैं तो आरती उतारूं रे संतोषी माता की। जय जय सन्तोषी माता जय जय मां।।
सदा होती है जय-जयकार मां के मन्दिर में। नित झांझर की होय झंकार मां के मन्दिर में।।
सदा मंजीरे करते पुकार मां के मन्दिर में। वरदानों का भरा है भण्डार मां की आंखों में।।
दीप धरूं धूप धरूं प्रेम सहित भक्ति करूं। जीवन सुधारूं रे ओ प्यारा २ जीवन सुधारूं रे।।
मैं तो आरती उतारूं रे सन्तोषी माता की। जय जय सन्तोषी माता जय जय मां।।

* माता के भोग लगाते समय की विनती *

भोग लगाओ मैया योगेश्वरी, भोग लगाओ मैया भुवनेश्वरी, भोग लगाओ अन्नपूर्णेश्वरी। मधुर पदार्थ मन भाए।।१।।
थाल सजाऊं खाजा खीर, प्रेम सहित विनती करूं धर धीर। तुम माता करुणा गम्भीर, भक्त चना गुड़ प्रिय पाए।।२।।

शुक्रवार तेरो दिन प्यारो, कथा तुम्हारी भक्तों के दुःख टारो। भाव मन में तेरो न्यारो, मनमाने सुख प्रगटाये।।३।।

*-श्री कृष्ण जी का पालना *

कन्हैया झूले पालना मैं वेदन में सुन आई। मैं वेदन में सुन आई, है ब्रह्मा से सुन आई ।।कन्हैया.।। काहे को तेरो बनो पालनो, काहे के लगे फुन्दना ।।कन्हैया.।। सोने को मेरो बनो पालनों अरी सखी रेशम के लगे फुन्दना ।।कन्हैया.।। कौन गांव तेरो परो पालनो अरे लाला कहु कौन भवन सुख सालना ।।कन्हैया.।। गोकुल मेरो परौ पालनो अरी सखी सुन नन्दमहल सुख सालना ।।कन्हैया.।। कौन पेड़ तेरो परो पालनो अरे लाला तोहि कौन झुलावे झुलना ।।कन्हैया.।। कदम की डार झूले मनमोहन पालनो, अरी सखी नन्दरानी झुलावे झूलना ।।कन्हैया.।।

।। संतोषी माता का हिंडोला ।।

झूलो झूलो संतोषी मां सोने का पालना। मुझ गरीब की टूटी झुपड़िया, गुजर करूं ऐसी राम कुटरिया ।। आओ-आओ संतोषी मां भोली मेरी भावना ।।झूलो.।। ग्वाल बाल तेरे गैयाँ चरावें। तेरो नाम लेकर घर को आवें देखो-देखो संतोषी मां बच्चों की साधना ।।झूलो.।। एक कोई ग्वाल चरावे तेरी गैया, कौन की गाय देख परचैया। पीछे-पीछे चला मन लाय बन बीच भया आवना ।।झूलो.।। तेरे मन्दिर पर पहुँचा आय अचरज छावना ।।झूलो.।। देखे तो जहां सुन्दर नारी, कोटि सूर्य सम तेज उजारी ! मंदिर में आया क्यों बाल ग्वाल, कहा तेरी चाहना ।।झूलो.।। तेज निहार ग्वाल घबरायो, मुखते बोलत वचन न आयो। कहत मुख आई बात, मेहनताना दिलवाना ।।झूलो.।। थाल में भरकर चावल लाई, देख ग्वाल मन कुढ़त समाई। कहा तीनों ये मोहि, आपुहि मौज उड़ावना ।।झूलो.।। नीचे तलेटी बावड़ी पै आयो, जल में खोल सब धान गिरायो। कपड़े में सोने की कलियां देख पछतावना ।।झूलो.।। भाग में गरीबी लिखी विधाता नेत्र अपराध साधना। मंदिर लौट तब आया द्वार बन्द पावना ।।झूलो.।। झूला को झूलन पर सुनाई, जापै कृपा सो सुने सुखदाई। सोना सिला में दिखलात जाके सांची भावना ।।झूलो.।। अपने लाल जडूला उतारें, माता जी सर्व संवारें। वे होय निहाल चरण राखें चाहना ।।झूलो.।।

।। माता की मंगल भावना का भजन ।।

मंगल का वास मंगल का वास तेरे मन्दिर में मंगल का वास, माता तेरे मन्दिर में ।।
जय अन्नपूर्णे जय जगदीश्वरी जय मां संतोषी जय परमेश्वरी। सबकी पूरी करे आस, माता तेरे मंदिर में० ।।
धूप का धुआं दसों दिश छायो, विश्व अमंगल शोक नसायो। भक्तन के मन में उल्लास, माता तेरे मंदिर में० ।।
झिलमिल२ दीपमाला, तीन लोक सुख छायो उजाला। निर्मल ज्योति प्रकाश, माता तेरे मंदिर में० ।।
सोहे मैया झूलों की माला, सुरत सुगन्ध भ्रमत मतवाला। महक रहे भूमि आकाश माता तेरे मंदिर में० ।।
तू ही मां बहुचरा, तू ही मां तुलसी जी तिलोत्तमा। लक्ष्मी तू रमापति निवास, माता तेरे मंदिर में० ।।
अम्बाजी मलकें बालाजी चटकें ललिताजी झूमें, भवानीजी घूरें जोगिनी नाचे हैं उनचास, माता तेरे मंदिर में० ।।
तेरे मंदिर में घंटा, ढोल, मंजीरा, शंख, नगाड़े बाजें। भक्त करें जय जयकार, माता तेरे मंदिर में० ।।आठ पहर अमृत बरसे, पान करे सो बड़भागी हर्षे। पीके रस हो जाय निहाल, माता तेरे मंदिर में० ।।कुमकुम की बरखा होवे सुखदाई, रहे हरदम छाई अरुनाई। नाचें तारी दे दे ताल, माता तेरे मंदिर में० ।।भगत मनोरथ पूरि भवानी, आदिशक्ति अम्बे कल्याणी। गावे निहोर गण विशाल, माता तेरे मंदिर में० ।।

* माता की कुमकुम पत्रिका *

अम्बे तेरे हैं नाम हजार कौन लिखिये कंकोत्री रोज रोज बदले मुकाम तेरे माता लिखके भेजूं कौन गाम ।।१।। ज्वाला जी में ज्लावा कहावे, नगरकोट में पूजा तू पावे। कोटि बाहु करती है काम, कौन नाम ।।२।। विंध्याचल में विध्यवासिनी मायापुरी में चण्डी आसनी। काली कलकत्ते में नाम, कौन गाम ।।३।। सम्भलपुरी बहुचरा कहावे पावागढ़ दुर्गा कहलावे। गंगा यमुना तेरे धाम, कौन गाम ।।४।। कोटेश्वर में सरस्वती तू है, राजनगर भद्रकाली भी तू है। बम्बई में महालक्ष्मी नाम, कौन नाम ।।५।। तू ही करौली में केला कहावे तू ही मीनाक्षी मदुरा में छावे, ढूंढू कौन धाम, कौन गाम ।।६।। जहां होय मात वहां से तू आजा, मुझ शरण आये के कारज बना जा। पूजूं श्रद्धा से तेरे पांव, कौन धाम ।।७।।

प्रकाशक :
न्यू स्टैण्डर्ड पब्लिकेशन्स
1813, चन्द्रावल रोड, दिल्ली-110007

मुद्रक : सिटीजन प्रिन्टर्स, दिल्ली-११०००७

हमारा लक्ष्य–कम मूल्यों पर संसार के प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षित करना है।

धार्मिक, कर्मकाण्ड, माहात्म्य, उपासना, कथाएं, यन्त्र-मन्त्र, तन्त्र व ज्योतिष साहित्य पढ़कर लोक-परलोक सुधारें।

पुस्तक	मूल्य
हनुमान चालीसा, दुर्गा, शिव, सरस्वती, गायत्री, राम चालीसा, दुर्गा, कवच, कमल नेत्र स्तोत्र प्रति पुस्तक	३.००
चालीसा पाठ संग्रह	६.००
श्रीमद्भागवत पुराण बड़ा	१५१.००
श्री बाल्मीकि रामायण ग्लेज	९०.००
श्री तुलसीकृत रामायण	१०१.००
श्री तुलसीदास गुटका	२०.००
रामायण राधेश्याम तर्ज	२५.००
रामायण राधेश्याम बरेली	४०.००
श्री शिव महापुराण	१०१.००
प्रेम सागर (लल्लूलाल)	२५.००
श्रीमद्भागवतगीता १८	२५.००
अध्याय माहात्म्य आरती बड़ा आकार २० चित्र सहित	५०.००
श्री योग वशिष्ठ दो भाग	२००.००

पुस्तक	मूल्य
श्री दुर्गासप्तशती भाषा	२०.००
श्री दुर्गासप्तशती भाषाटीका	४०.००
श्री दुर्गा स्तुति (पाठ)	१०.००
सोमवार, मंगलवार, बुधवार, वीरवार, शुक्रवार (संतोषी माँ) शनिवार, रविवार व्रत कथा लम्बा साइज प्रत्येक	५.००
श्री सत्यनारायण व्रत कथा	५.००
श्री सत्यनारायण व्रत कथा भाषा टीका	८.००
महालक्ष्मी-दीपावली पूजन	३.००
माता की भेंटें सजिल्द बड़ी	१५.००
भक्तिसागर सजिल्द बड़ी	२०.००
कार्तिक माहात्म्य	१२.००
एकादशी माहात्म्य	१२.००
माघ माहात्म्य	१२.००
वैशाख माहात्म्य	१२.००

पुस्तक	मूल्य
गरुड पुराण भाषा	१५.००
गरुड पुराण भाषाटीका	३०.००
बारह माह व्रत त्यौहार	१५.००
वशिष्ठ हवन पद्धति	१०.००
यज्ञोपवीत पद्धति	१०.००
मूल शान्ति	१०.००
एकादशादि सपिण्डी	१०.००
प्रेत-मंजरी	१०.००
विवाह पद्धति पं. रामस्वरूप	१०.००
विवाह पद्धति पं. देवीदयाल	२०.००
पंचक शान्ति	१०.०
ज्योतिष-साहित्य	
हस्त सामुद्रिक	२०.००
ज्योतिष शास्त्र	२५.००
अथ शीघ्र बोध	१०.००
ज्योतिष सर्व संग्रह	२५.००
तेजी मन्दी सट्टा गाइड	२५.००

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र	मूल्य
सर्वमनोकामना पूर्ण यन्त्र	५०.००
सर्वहितकारी मंत्र प्रयोग	५०.००
प्राचीन इन्द्रजाल	५०.००
इन्द्रजाल सचित्र	२५.००
जादू मिस्मेरिज्म	२५.००
आसाम बंगाल का जादू	२५.००
सावरी तन्त्र सेवडे का जादू	२५.००
जादूगरी शिक्षा	२५.००
वशीकरण मन्त्र	२५.००
सचित्र करामात	२५.००
ताश का जादू	२५.००
स्त्रियोपयोगी	
दर्जी मास्टर	३०.००
बुनाई शिक्षा	२५.००
पाक कला	३०.००
कशीदाकारी सजिल्द	२५.००

पुस्तक	मूल्य
फिल्मी हारमोनियम गाइड	२५.००
अचार चटनी मुरब्बा गाइड	२५.००
मेडीकल पुस्तकें	
मेडीकल पशु चिकित्सा	२५.००
एलोपैथिक गाइड	७५.००
एलोपैथिक पेटेन्ट मेडीसन्ज	७५.००
पुरुष रोग चिकित्सा	३६.००
इंजेक्शन गाइड	३०.००
स्वप्न दोष चिकित्सा	२५.००
महिलाओं की बीमारी तथा उनकी चिकित्सा	२५.००
घर का वैद्य	२५.००
कम्पाउण्डरी शिक्षा	२५.००
योगासन	२५.००
कद लम्बा करें (योगासन द्वारा)	२५.००
जूडो कराटे	२५.००

डाक व्यय प्रत्येक पुस्तक पर अलग होगा।

इसके अतिरिक्त हमारे प्रकाशन से समस्त धार्मिक, टैकनिकल, वैद्यक, कढ़ाई, बुनाई, धार्मिक, ज्योतिष अर्थात् सभी विषयों की पुस्तकें कम मूल्यों पर नई साज-सज्जा के साथ हर समय मिलती हैं। सुरुचिपूर्ण प्रकाशनों को घर बैठे मंगाने के लिए पत्र लिखें।

मंगाने का पता– **न्यू स्टैण्डर्ड पब्लिकेशन्ज** १८१३, चन्द्रावल रोड, (मलकागंज) दिल्ली-११० ००७